# प्राकृत प्रयोगोनी पगदंडी पर

ह. भायाणी

## १. अर्धमागधीमां प्राप्त प्राचीन शब्दप्रयोगो

'अनुसंधान-६' मां अमा. **०मीण** प्रत्ययवाळां प्राचीन रूपो विषे ध्यान खेंच्युं हतुं (पृ. ७६-७८ ) । के. आर. चंद्राए **खेतन्न/खेयन्न** (सं. **क्षेत्रज्ञ**) वगेरेनी प्राचीनता विषे लख्युं छे । अहीं तेवा ज बीजा थोडाक प्राचीन प्रयोगो नोंधुं छुं ।

### ( १ ) 'उउ-बद्ध', 'उडुबद्ध'

पिंनि. २४, ओनि. २९६, ३४९, ६६०, ओनिभा. १२३, १७५मां **उउ-बद्ध** अने ओनि. २७मां **उडु-बद्ध** 'वर्षाकाल सिवायनो आठ मासनो, शियाळा तथा उनाळानो समय' एवा अर्थमां वपराया छे । जेम के

'गच्छम्मि एस कप्पो वासावासे तहेव उउ-बद्धे ।' (ओनिभा. १२३)

पेरिसना डॉ. नलिनी बलबीरे आ प्रयोगनी विचारणा करतां पालि साहित्यमां पण **उतुकाल** शब्दनो आवा ज अर्थमां प्रयोग थयो होवानुं बताव्युं छे (एक अंगत पत्रमां) । **उउ-बद्ध** के **उडु-बद्ध** नुं संस्कृत पूर्व रूप तो **ऋतु-बद्ध** छे. एनो उपर्युक्त अर्थ कई रीते निष्पन्न थयो ते विचारणीय छे । **ऋतु**नो 'वर्षाऋतु' एवो रूढ अर्थ थयो होय (जेम अरबी-फारसी **मौसम** 'ऋतु' परथी अंग्रेजीमां Monsoon 'वर्षाऋतु') । पण पालि प्रयोगनो खुलासो आथी मळतो नथी । परंतु आवो विशिष्ट शब्दप्रयोग समानपणे जैन अर्धमागधी आगमोनी भाषामां तथा बौद्ध पालि आगमोनी भाषामां मळे छे ए हकीकत सूचक छे ।

### ( २ ) 'पुरिसादाणीए'

'समवायाङ्ग', 'कल्पसूत्र' तथा 'उत्तराध्ययन' मां (छठ्ठा अध्ययनना उपसंहारना चूर्णि अने शान्त्याचार्यनी टीकामां आपेला पाठांतर अनुसार) तीर्थंकर पार्श्वनुं 'पुरिसादाणीए' एवुं एक लाक्षणिक विशेषण मळे छे. जैन परंपरामां 'पुरुषादानीय' एटले के 'उपादेय पुरुष', 'आप्त पुरुष' (पासम.) एवो अर्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करायो छे ।

हवे पालिमां 'पुरिशाजानीय', 'पुरिशाजञ्ञ' एवा प्रयोग मळे छे । (जुओ Adelheid Mettenो लेख : When Did the Buddha Live ? ए पुस्तकमां संपा. Heinz Bechert, १९९५, पृ. १८३). सं. 'आजानेय' = 'कुलीन' (सं. 'आजाब' = 'जन्म'), 'आजानि'='उत्तम कुळमां जन्म', 'आजानेय्य'=कुलीन', पछीथी 'कुलीन घोडो', 'जात्य अश्व' (अमरकोश १८, ४४; अभिधानचिन्तामणि, १२३४) वगेरे जाणीता छे । एटले 'आदाणीए' ए 'आजाणेए'नुं परंपरामां बराबर न सचवायेलुं, विकृत रूपांतर छे. तेथी मूळ अर्थ पण भूलाई गयो अने 'आदानीय'नुं पछी संदर्भमां बंध बेसे तेम अनुकूळ अर्थघटन करायुं ।

'जुगुप्सा' > 'दुगुंछा' वगेरे तालव्य व्यंजननो दंत्य बन्यानां उदाहरण मळे छे (पिशेल, §२२५).

आमांथी ए फलित थाय छे के अर्धमागधी आगमोनी भाषामां मळता कटलाक शब्दप्रयोगोना मूळ स्वरूप अने अर्थ माटे पालि भाषामांथी मार्गदर्शन मळे छे, अने ए हकीकत ए प्रयोगोनी प्राचीनता सूचवे छे। वळी 'पुरिसादाणीय'ना अर्थनी पण प्रतीतिकर स्पष्टता थाय छे ।

### ( ३ ) 'ताइ'

'उत्तरज्झाय'मां तथा 'सूयगड' सुत्तमां **ताइ** शब्दनो प्रयोग मळे छे अने परंपरामां तेनो 'त्राता, उपकारी, मुनि' एवो अर्थ समझवामां आव्यो छे । गुस्ताव रोथे तेमना एक संशोधन-लेखमां **ताइ** शब्दना प्रयोगना आगमिक साहित्यमांथी बधा संदर्भो आपी, पालि साहित्य तथा अन्य भाषाओना बौद्ध साहित्यमांथी **तादि, ताई** ए शब्दोना प्रयोगोना संदर्भो टांकीने बताव्युं छे के पालि **तादि**नुं मूळ सं. **तादृश्** छे, अने जे संदर्भोमां बौद्ध तेम ज जैन साहित्यमां **तादि, ताइ** वगेरे वपराया छे, त्यां तेमनो अर्थ पण 'तेना जेवा, तेना जेवा उत्तम, पवित्र महापुरुष' एवो ज थाय छे । **ताइ**ना मूळ रूप तरीके **तादि**, सं. **तादृश्** भुलाई जतां **ताइ**नो संबंध **त्रा**- धातु साथे जोडी देवामां आव्यो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ उदाहरण पण अर्धमागधीमां प्राचीन प्रयोगो जळवाया होवानुं अने मूळनी शब्दरूप अने अर्थने लगती परंपरा केटलीक बाबतमां लुप्त थई होवानुं सूचवे छे ।

(Gustav Roth : " 'A Saint Like That' and 'A Saviour' in Prakrit, Pali, Sanskrit and Tibetan Literature", श्री महावीर जैन विद्यालय सुवर्ण जयंती ग्रंथ, भाग १, १९६८, पृ. ३१-४६; Indian Studies 1986, पृ. ९१-१० उपर पुनः प्रकाशित) ।

## २. प्राकृत 'उड्डुक्किय'

'दसकालिय' (अथवा 'दसवेयालिय') सूत्रनी अगस्त्यसिंह कृत चूर्णिमां लूषकहेतुना उदाहरणमां, काकडीभरेला गाडामांनी बधी काकडी पोते खाय तो गाडानो धणी तेने नगरद्वारमांथी नीसरी न शके एवडो लाडु आपे एवी शरत करीने एक धूर्त दरेक काकडी पर पोताना दांत बेसाडे छे अने ज्यारे न्यायाधिकारी धूर्तना पक्षमां चुकादो आपे छे, त्यारे गाडानो धणी बीजा एक धूर्तनी शीखवणीथी एक नानो लाडु नगरद्वारनी वच्चे मूकीने तेने 'बहार नीकळ, नीकळ' एम कहेतां, ए न हलतो लाडु पहेला धूर्तने शरत प्रमाणे आपी दे छे - एवी कथा छे । तेमां 'सव्व-तउसाणि दंतेहिं उड्डुक्कियाणि' एवो प्रयोग छे । 'देशी शब्दकोश'मां 'दांतों से काट कर दागी करना' ए प्रमाणे अर्थ तो बराबर कर्यो छे, परंतु **उड्डुक्किय**ने देश्य गण्यो छे अने तेनो संबंध कन्नड **उडि** 'काटना, टुकडे करना' साथे होवानुं कह्युं छे ।

हकीकते मूळ पाठ सहेज भ्रष्ट छे । **उड्डुक्किय** एवुं शब्दरूप जोईए । प्रा. **डक्क** = सं. **दष्ट** । **डक्क** ए **मुक्क**नी जेम सादृश्यमूल्क रूप छे । **उद्** उपसर्ग साथे जोडाईने **उड्डुक्क** 'करडवुं' । तेना परथी भूतकृदंत **उड्डुक्किय** ।

(संदर्भ : दसकालियसुत्त, संपा. मुनि पुण्यविजय. प्राकृत ग्रंथ परिषद, ग्रंथांक १७. १९७३.

देशी शब्दकोश. संपा. मुनि दुल्लहराज, १९८८)

★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org